ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-6 अंक : 84

सहयोग शुल्क : रु. 1 / डिसेम्बर : 2023

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

"वर्ल्ड डिसेबिलिटी डे दिव्यांगों के सम्मान और स्वीकार का प्रतीक है"
– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

"वर्ल्ड डिसेबिलिटी डे दिव्यांगो के सम्मान की स्वीकृति है"
– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

समूचे संसार के दिव्यांगों की स्वीकृति का सम्मान करने के लिए और उनके अधिकारों और कल्याण को बढावा देने के लिए ३ दिसंबर को वर्ल्ड डिसेबिलिटी डे (विश्व विकलांगता दिवस) मनाया जाता है, सभी दिव्यांगों को इस दिन की अनेकानेक शुभकामनाएं। इसे अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस के नाम से भी जाना जाता है। दुनिया भर के लोगों को प्रभावित करने वाले राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं के बारे में जागरूकता लाने और सभी दिव्यांगों की मुख्य धारा में सम्मान के साथ स्वीकृतिके लिए संवेदनशील लोग अपना अपना योगदान दे रहे हैं। ३ दिसंबर केवल एक प्रतीक बनकर ना रह जाए और दिव्यांगों के अधिकारों की रक्षा हो, उनके लिए बनाए गये कानूनों का हर देश में पालन हो यह देखना केवल सरकार का ही नहीं किंतु प्रत्येक संवेदनशील नागरिक का कर्तव्य है। इस कर्तव्य का पालन कर रहे सभी नागरिकों, संगठनों और सरकार का हम अभिवादन करते हैं।

मलाथी कृष्णमूर्ति होल्ला जैसी दिव्यांग महिलाओंने अपनी विकलांगता और मर्यादाओं को भूलकर अपनी क्षमता का पूरा उपयोग करते हुए लक्ष्य को हांसिल कर के सभी दिव्यांगों को सम्मान दिलाया है। कोई दिव्यांग महिला खेलों में अपान योगदान देकर ३०० से अधिक स्वर्णपदक प्राप्त करे यह केवल दिव्यांग ही नहीं किंतु सभी लोगों के लिए प्रेरणा के स्रोत से कम नहीं है। दिव्यांगों खिलाडियों को भी उनके प्रदर्शन के अनुसार अर्जुन पुरस्कार मिलना चाहिए ऐसी मांग कर उन्होंने खेलों में सर्वोच्च पुरस्कार माने जानेवाले अर्जुन पुरस्कार को भी प्राप्त किया और पद्म श्री जैसे नागरिक पुरस्कार को भी पाकर सभी दिव्यांगों का सम्मान बढ़ाया है।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

डिसेम्बर : 2023, पृष्ठ संख्या : 16

वर्ष-6 अंक : 84

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्‌गुरु ॐऋषि स्वामी।

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

३ दिसंबर वर्ल्ड डिसेबिलिटी डे- (विश्व विकलांगता दिवस)

विकलांग व्यक्तियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस (आईडीपीडी) संयुक्त राष्ट्र दिवस है जो हर साल 3 दिसंबर को मनाया जाता है।

यह दिन समाज और विकास के हर स्तर पर विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों और कल्याण को बढ़ावा देने और राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के सभी पहलुओं में विकलांग व्यक्तियों की स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के बारे में है। डब्ल्यूएचओ हर साल इस दिन को मनाने में संयुक्त राष्ट्र के साथ शामिल होता है, जो विकलांग लोगों के अधिकारों को सुरक्षित करने के महत्व को मजबूत करता है, ताकि वे दूसरों के साथ समाज में पूर्ण, समान और प्रभावी ढंग से भाग ले सकें, और अपने जीवन के सभी पहलुओं में किसी भी बाधा का सामना न करें।

जिनेवा में अपने मुख्यालय में, WHO जनता को शिक्षित करने, जागरूकता बढ़ाने, राजनीतिक इच्छाशक्ति और संसाधनों की वकालत करने और W H O की उपलब्धियों का जश्न मनाने के लिए एक वार्षिक IDPD कार्यक्रम आयोजित करता है। 2022 में, WHO ने विकलांग व्यक्तियों के लिए स्वास्थ्य समानता पर वैश्विक रिपोर्ट लॉन्च की। यह रिपोर्ट उन दृष्टिकोणों और कार्रवाइयों को सामने रखती है जो देश विकलांग व्यक्तियों द्वारा अनुभव की जाने वाली स्वास्थ्य असमानताओं को दूर करने के लिए अपना सकते हैं।

आज भी समाज में दिव्यांगता को एक सामाजिक कलंक के रूप में देखा जाता है जिसे सुधारने की आवश्यकता है । इसीलिए, समाज एवं विकास के प्रत्येक स्तर पर दिव्यांग लोगों के

अधिकारों और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए हर साल ३ दिसंबर के दिन विश्व विकलांग दिवस मनाया जाता है। इसे अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस के नाम से भी जाना जाता है । यह दिन दुनिया भर के लोगों को प्रभावित करने वाले राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं के बारे में जागरूकता बढ़ाता है ।

३ दिसंबर को विकलांगता दिवस क्यों मनाया जाता है?

विश्व विकलांग दिवस के लिए वार्षिक ऑब्जरवेशन की घोषणा यूनाइटेड नेशंस ने जनरल असेम्बली रेजोल्यूशन में १९९२ में की थी ।

अंतरराष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस का आयोजन पहली बार ३ दिसम्बर १९९२ को हुआ था । इसकी शुरुआत विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization – WHO) ने की थी । संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष १९८१ को "अंतर्राष्ट्रीय विकलांग व्यक्तियों का वर्ष" घोषित किया था।

विकलांग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस २०२३ का विषय क्या है?

प्रत्येक वर्ष, आईडीपीडी विकलांगता अधिकारों और समावेशन के विभिन्न पहलुओं को संबोधित करने के लिए एक विशिष्ट विषय पर ध्यान केंद्रित करता है। २०२३ का विषय है " विकलांग व्यक्तियों के लिए, उनके साथ और उनके द्वारा एसडीजी को बचाने और हासिल करने की कार्रवाई में संयुक्त ।

विकलांग का नया नाम क्या है?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले साल २७ दिसंबर को अपने रेडियो संबोधन 'मन की बात' में कहा था कि शारीरिक रूप से अशक्त लोगों के पास एक 'दिव्य क्षमता' है और उनके लिए 'विकलांग' शब्द की जगह 'दिव्यांग' शब्द का इस्तेमाल किया जाना चाहिए ।

भारत में कितने विकलांग व्यक्ति हैं?

भारत में १२१ करोड़ की आबादी में से २.६८ करोड़ व्यक्ति 'दिव्यांग' हैं जो कुल जनसंख्या का

२.२१% है। दिव्यांग जनसंख्या में ५६% (१.५ करोड़) पुरुष हैं और ४४% (१.१८ करोड़) महिलाएँ हैं।

भारत में कौन सी विकलांगता सबसे ज्यादा है?

देश में १९ लाख ९८ हजार ५३५ लोग बोल नहीं पाते हैं। चलने से असहाय लोगों की संख्या ५४ लाख ३६ हजार ६०४ है। मानसिक विकलांगता के शिकार लोगों की संख्या २१ लाख २८ हजार ५३४ है।

विकलांगता का शाब्दिक अर्थ क्या है?

सामान्य अर्थों में विकलांगता ऐसी शारीरिक एवं मानसिक अक्षमता है जिसके चलते कोई व्यक्ति सामान्य व्यक्तियों की तरह किसी कार्य को करने में अक्षम होता है।

विकलांगों की ४ श्रेणियां कौन सी हैं?

ऑटिज्म, मानसिक विकलांगता, विशिष्ट ज्ञान अक्षमता और बौद्धिक अक्षमता वाले अभ्यर्थियों को इस श्रेणी में रखा जाता है।

विकलांग के तीन प्रकार क्या हैं?

विकलांगताएं कई प्रकार की होती हैं जैसे बौद्धिक, शारीरिक, संवेदी और मानसिक बीमारी।

राष्ट्रीय विकलांग संस्थान कहाँ स्थित है?

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कोलकता मार्च १९८६ में राष्ट्रीय अस्थि विकलांग संस्थान के परिसर, बनहुगली, बी.टी. रोड, कोलकता ७०००९० पर स्थापित हुआ। यहाँ केन्द्र द्वारा भारतीय पुनर्वास परिषद् द्वारा अनुमोदित निम्नलिखित तीन दीर्घकालीन पाठयक्रम चलाये जाते हैं: एक वर्षीय बी. एड.

देश में सबसे कम विकलांग व्यक्ति किस राज्य में है?

सिक्किम की कुल आबादी का २.९८% हिस्सा विकलांग बताया गया है। दमन और दीव (०.९%) में विकलांगता का प्रसार सबसे कम है।

आज १.३ अरब से अधिक लोग महत्वपूर्ण विकलांगता का अनुभव करते हैं, जो वैश्विक आबादी का १६% प्रतिनिधित्व करता है। कई विकलांग व्यक्तियों की मृत्यु पहले हो जाती है, उनमें कई प्रकार की स्वास्थ्य स्थितियाँ विकसित होने का खतरा बढ़ जाता है, और बाकी आबादी की तुलना में उन्हें रोजमर्रा के कामकाज में अधिक समस्याओं का अनुभव होता है। हम इन खराब स्वास्थ्य परिणामों को "स्वास्थ्य असमानताएं" कहते हैं क्योंकि इन्हें काफी हद तक टाला जा सकता है और ये स्वास्थ्य क्षेत्र के भीतर और बाहर अन्यायपूर्ण कारकों द्वारा संचालित होते हैं। इन कारकों में शामिल हैं, हमारे समाज में भेदभाव, असमान नीतियां, स्वास्थ्य के निर्धारक, देखभाल की पहुंच या गुणवत्ता की कमी, और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के नकारात्मक दृष्टिकोण - । ये स्वास्थ्य असमानताएँ एक स्पष्ट अनुस्मारक हैं कि विकलांग व्यक्तियों को अक्सर पीछे छोड़ दिया जाता है, और सभी के लिए अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण (एसडीजी ३) को प्राप्त करने के लिए विकलांग व्यक्तियों की सार्थक भागीदारी और सशक्तिकरण की आवश्यकता होती है।

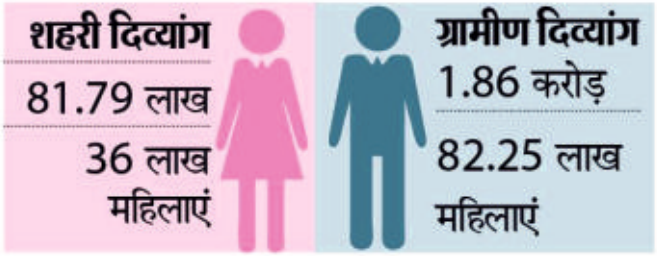

जब तक हम एकजुट हैं, विकलांग व्यक्तियों के लिए, उनके साथ और उनके लिए एसडीजी हासिल करना अब पहले से कहीं अधिक हमारी पहुंच में है। २०१९ में, संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने संपूर्ण संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के प्रत्येक कार्य और मुख्य कार्यों में विकलांगता को शामिल करने के लिए विकलांगता समावेशन रणनीति (यूएनडीआईएस) की शुरुआत की। यूएनडीआईएस ने हमें एक साहसिक प्रणालीगत परिवर्तन शुरू करने के लिए उपकरण दिए हैं, और दुनिया भर में विकलांग व्यक्तियों के लिए, उनके साथ और उनके द्वारा अभूतपूर्व प्रगति कर रहा है। ये उपलब्धियाँ विकलांगता समावेशन के लिए प्रणालीगत योजना के मूल्य का उल्लेखनीय प्रदर्शन, उत्सव का कारण और इन प्रयासों को आगे बढ़ाने की आकांक्षा का स्रोत हैं।

'ए डिफरेंट स्पिरिट' मलाथी कृष्णमूर्ति होल्ला

बैंगलोर इंडिया की **मलाथी कृष्णमूर्ति** होल्ला अंतरराष्ट्रीय पैरा-एथलीट हैं, उनका जन्म 6 जुलाई 1958 को कोटा, कर्नाटक, भारत में हुआ था। उनके पिता कृष्णमूर्ति होल्ला एक छोटा सा होटल चलाते थे, जबकि उनकी माँ पद्मावती होल्ला अपने चार बच्चों की देखभाल करती थीं। मलाथी जब एक वर्ष की थी तब पोलियो के कारण उसे लकवा मार गया था। लगभग 2 साल तक बिजली के झटके दे कर उन्हें ठीक करने की कोशिश की जिससे उपरी हिस्से में तो बदलाव आया परन्तु निचले हिस्से में बदलाव नहीं आया और कमर से नीचे उसका शरीर कमजोर रहा। इसके बावजूद उन्होंने कुछ ऐसा करना चाहा जिससे दुनिया को उनपर गर्व हो। उसके पैरों की टूटी हड्डियों के लिए 30 से अधिक सर्जरी हो चुकी हैं।

हालाँकि दो साल तक इलेक्ट्रिक शॉक थेरेपी से उनके ऊपरी शरीर को ताकत वापस पाने में मदद मिली, लेकिन कमर के नीचे उनका शरीर कमज़ोर हो गया। इसके बावजूद, मलाथी ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में 389 स्वर्ण, 27 रजत और 5 कांस्य जीते हैं, जिनमें से अधिकांश किराए की व्हीलचेयर पर जीते हैं।

इन्होने कॉलेज में विभिन्न खेलों में भाग लेना शुरू कर दिया और आज पैरा-ओलंपिक सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग ले चुकी हैं। इन्होंने डेनमार्क में 1989 के विश्व मास्टर्स खेलों में 200 मीटर, शॉट पुट, डिस्कस और भाला फेंक में स्वर्ण जीता। 397 से अधिक स्वर्ण पदक, 27 रजत पदक और 5 कांस्य पदक जीतने वाली मलाथी को प्रतिष्ठित अर्जुन और पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्होंने दक्षिण कोरिया , बार्सिलोना, एथेंस और बीजिंग में आयोजित पैरालिंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया ; बीजिंग, बैंकॉक, दक्षिण कोरिया और कुआलालंपुर में आयोजित एशियाई खेल; विश्व मास्टर्स डेनमार्क और ऑस्ट्रेलिया में, राष्ट्रमंडल खेल ऑस्ट्रेलिया में और

ओपन चैंपियनशिप बेल्जियम, कुआलालंपुर और इंग्लैंड में आयोजित खेलों में भी भारत का प्रतिनिधित्व कर देश को गौरव दिलाया है।

वह सिंडिकेट बैंक में प्रबंधक के रूप में काम करती है और अपने दोस्तों के साथ मिलकर गठित एक धर्मार्थ ट्रस्ट - मथरू फाउंडेशन में विभिन्न विकलांगता वाले 54 बच्चों को आश्रय देती है। मथरू फाउंडेशन मराठल्ली में स्थित है। कुछ परोपकारी डॉक्टरों के कारण मथरू घर के बच्चों की सर्जरी निःशुल्क होती है। वह मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के पोलियो पीड़ितों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, जिनके माता-पिता अपने बच्चे को स्कूल भेजने या चिकित्सा उपचार प्रदान करने में सक्षम नहीं हैं।

उन्होंने 8 जुलाई 2009 को अपनी पहली अधिकृत जीवनी, 'ए डिफरेंट स्पिरिट' लॉन्च की

"जब मैं छोटी थी, मैं अपने उन दोस्तों में पहली बनना चाहती थी जो गिरे हुए आमों को चुनने के लिए पिछवाड़े में दौड़ते थे। मैं एक पक्षी की तरह निडर होकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक उड़ना चाहती थी। लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई मुझे एहसास हुआ कि दौड़ने के लिए पैरों और उड़ने के लिए पंखों की ज़रूरत होती है। मुझे चोट लगी थी, लेकिन मैंने हार नहीं मानी, मुझे पता था, एक दिन, मैं दौड़ूंगी..." किताब में मलाथी कहती हैं।

"इस प्रकार मैंने खेल को अपनाया और जीवन में कुछ अलग करने का फैसला किया। हां, हम अलग हैं और इसलिए हमारा जीवन भी उस अंतर का एक ज्वलंत उदाहरण होना चाहिए," वह आगे कहती है।

"हमें किसी सहानुभूति की आवश्यकता नहीं है, बल्कि हमें अपनी योग्यता साबित करने के लिए समाज से सहानुभूति की आवश्यकता है"

व्हीलचेयर पर बैठी मलाथी से पद्मश्री पुरस्कार विजेता (2001 में यह पुरस्कार पाने वाले पहले विकलांग व्यक्ति) तक का कायापलट धैर्य और दृढ़ संकल्प की एक अविश्वसनीय कहानी है। उन्होंने समर्थ विकलांग एथलीटों को अर्जुन पुरस्कार देने के लिए अभियान चलाया और अंततः 1995 में इसे प्राप्त किया, जो धैर्य की एक असाधारण कहानी है। उन्हें 1995 में कर्नाटक सरकार से केके बिड़ला पुरस्कार और एकलव्य पुरस्कार भी मिला है और

उन्हें अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट, यू.एस.ए द्वारा 1999 में वुमन ऑफ द ईयर नामित किया गया था । उसी वर्ष, इंटरनेशनल बायोग्राफिकल सेंटर, कैम्ब्रिज, यूके ने उन्हें इंटरनेशनल वुमन ऑफ द ईयर भी नामित किया।

मलाथी का दर्दनाक बचपन:

मलाथी के माता-पिता ने मलाथी के निचले शरीर में जीवन लाने के प्रयास जारी रखे । 2 साल की शॉक थेरेपी के बाद, उसके माता-पिता के पास उसके निचले शरीर को पुनर्जीवित करने की उम्मीद के साथ उसे चेन्नई के आर्थोपेडिक सेंटर में सौंपने के अलावा कोई विकल्प नहीं था । माता-पिता वाले घर के आराम और गर्मजोशी से दूर, यह केंद्र अगले 15 वर्षों के लिए मलाथी का नया घर बनने जा रहा था । लेकिन यह एक ऐसी जगह थी जो सामान्य बाहरी दुनिया से अलग थी । यह एक ऐसी जगह थी जहाँ वह अपने आस-पास विकलांग लोगों के साथ बड़ी होती थी । उसके आस-पास के अधिकांश बच्चे गरीब परिवारों से थे, जिन्हें उनके माता-पिता ने कभी वापस न आने के लिए छोड़ दिया था।

लगभग 15 वर्षों तक मलाथी का जीवन लगातार सर्जरी से भरा रहा । महत्वपूर्ण चिकित्सा प्रक्रियाओं के बाद दर्द होना केंद्र की एक दिनचर्या थी । वह केंद्र वहीं था जहां उन्होंने पढ़ाई भी की और शरीर की ताकत हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत भी की । इस सब से गुजरते हुए, मलाथी ने धीरे-धीरे और लगातार मानसिक और शारीरिक ताकत हासिल की और अपने जीवन में शारीरिक दर्द और मानसिक आघात की आदत डाल ली । अपने जीवन में, मलाथी को 32 से अधिक सर्जरी से गुजरना पड़ा । केंद्र में, वह अपने जैसी स्थितियों वाले बच्चों के एक समूह के साथ रुकी । उसने महसूस किया कि सुविधा केंद्र में अधिकांश बच्चे बिल्कुल अकेले थे । उसने जल्द ही निर्णय लिया कि उसे दवा का कोई विकल्प चाहिए, जो उसके दर्द को दूर कर दे । यही वह समय था जब उन्होंने अपने जीवन की कमी को पूरा करने के लिए खेलों को चुना। मलाथी ने खेल को अपने जुनून के रूप में खेला, एक थेरेपी जिसे उन्होंने अपने रोजमर्रा के दर्द से सांत्वना और आजादी पाने के लिए अपनाया । उसे यह श्रेय देना होगा कि वह संघर्ष करती रही और इन सभी वर्षों के दौरान किसी भी समय निराशा से पीछे नहीं हटी।

उन्होंने जीवन में कुछ अलग करने के लिए खेल को चुना । खुद अलग होने के कारण, वह जानती थी कि अंतर का उदाहरण स्थापित करने का यही एकमात्र तरीका था । उनके पिता ने भी उन्हें इसमें प्रोत्साहित किया और उन्हें अपने खोल से बाहर आकर वास्तविक दुनिया में अपनी जगह लेने के लिए कहा ।

लेकिन जिंदगी को मलाथी के लिए एक और चुनौती पेश करनी थी। यह एक ऐसी लड़ाई थी जिसे भारत के हर विकलांग व्यक्ति को लड़ना चाहिए । केंद्र में 15 साल बिताने के बाद घर वापस आने पर, मलाथी अब अपने आराम क्षेत्र से बाहर आ गई थी - एक ऐसे समाज में जो विकलांग लोगों को हेय दृष्टि से देखता था । जैसा कि वह याद करती है, विकलांग होने का सबसे बड़ा आघात उसके अंदर घर कर जाने वाली हीन भावना है । यही चीज़ सबसे अधिक पीड़ा देती है । लेकिन खेल के प्रति उनके जुनून ने उन्हें अपनी विकलांगता के साथ-साथ लड़ने का आत्मविश्वास और ताकत दी ।

उन कठिनाइयों और उथल-पुथल के बावजूद, जिन्होंने उसे परेशान किया था, मालती ने भाग्य के प्रकोप से घबराए बिना रानी के आकार का जीवन जीने का फैसला किया । उन्होंने अपने दर्द को भूलने के लिए खेल को सर्वोत्तम वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में चुना और आधुनिक भारत की सबसे प्रेरणादायक खेल हस्तियों में से एक बन गईं । मलाथी को प्रतिस्पर्धी खेल की चुनौती पसंद थी । उसने कड़ी मेहनत की, भले ही उसके पास एक विकलांग एथलीट के लिए आवश्यक सबसे महत्वपूर्ण उपकरण - रेसिंग व्हीलचेयर नहीं था!

सोने का ढेर!

मलाथी बेंगलुरु के महारानी कॉलेज में शामिल हो गईं जहां उन्होंने प्रतिस्पर्धी खेलों के प्रति अपने जुनून को जारी रखा । यह कभी आसान नहीं था, लेकिन मलाथी एक योद्धा थीं । उदाहरण के लिए, कॉलेज में, जब उसे पता चला कि उसकी सभी कक्षाएं ऊपरी मंजिल पर हैं, तो वह प्रिंसिपल के पास गई, समस्या बताई और पूछा कि क्या उसकी कक्षाएं निचली मंजिल पर स्थानांतरित की जा सकती हैं । कॉलेज की ओर से आगे कोई समीक्षा नहीं की गई, अनुकूल कार्रवाई अचानक हुई । “मुझे नहीं लगता कि मैं एक विकलांग व्यक्ति हूं । बेशक, मैं शारीरिक रूप से अक्षम हूं । लेकिन वह मेरे शरीर का सिर्फ एक हिस्सा है । मेरा आत्मविश्वास ख़राब नहीं हुआ है”, उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा।

उसने कड़ी मेहनत की, भले ही उसके पास एक विकलांग एथलीट के लिए आवश्यक सबसे महत्वपूर्ण उपकरण - रेसिंग व्हीलचेयर नहीं था! उनकी ताकत और आत्मविश्वास ने उन्हें खेल के सभी स्तरों से लेकर

वोइस टू दिव्यांग

राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया, जहां उन्होंने विकलांगों के खेलों में अपना दबदबा बनाए रखा । 1975 से शुरू करके, उन्होंने कई राष्ट्रीय पदक जीते । यह आश्चर्य की बात थी कि मलाथी ने गोला फेंक, डिस्कस, भाला फेंक, व्हीलचेयर दौड़ और बाधा दौड़ जैसी कई क्षेत्र स्तरीय एथलेटिक स्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया । अधिकारियों द्वारा नोटिस किए जाने पर, उन्हें 1981 में सिंडिकेट बैंक द्वारा एक लिपिक पद दिया गया था ।

1988 में ही मलाथी ने सियोल में अपनी पहली अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता - पैरा-ओलंपिक में भाग लिया । जब मलाथी कृष्णमूर्ति होला को उनके पहले पैरालंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया, तो वह बहुत खुश थीं । जबकि अन्य विदेशी एथलीटों के साथ उनके निजी कोच थे, मलाथी पूरी तरह अपने दम पर थीं । मलाथी ने पहली बार उस अंतर को देखा जो एक निजी कोच प्रदर्शन में ला सकता है । निराशा में हार न मानते हुए, मलाथी ने पेशेवरों द्वारा प्रशिक्षण के कैसेट और रिकॉर्डिंग उठाई और उसके अनुसार प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया । नतीजा जल्द ही देखने को मिला. एक साल में ही वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने लगीं । डेनमार्क में 1989 के विश्व मास्टर्स खेलों में, उन्होंने 200 मीटर, गोला फेंक, डिस्कस और भाला फेंक में स्वर्ण पदक जीता। वह एक अंतरराष्ट्रीय चैंपियन थीं और उन्होंने भारत के लिए स्वर्ण पदक हासिल करना जारी रखा । सियोल के बाद, मलाथी ने बार्सिलोना, एथेंस और बीजिंग में पैरालंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है; और बीजिंग, बैंकॉक, दक्षिण कोरिया और कुआलालंपुर में एशियाई खेल।

कुल मिलाकर, मलाथी ने अपने करियर में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में 389 स्वर्ण, 27 रजत और 5 कांस्य जीते हैं, ज्यादातर किराए की रेसिंग व्हीलचेयर पर! हालाँकि आज बहुत से लोग उन्हें नहीं जानते होंगे, लेकिन मलाथी विकलांग व्यक्तियों की एक पूरी पीढ़ी के लिए प्रेरणा रही हैं और दूसरों को अपनी शारीरिक सीमाओं से ऊपर उठने के लिए प्रेरित करती रहती हैं । इस विचार ने उन्हें 2002 में शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों के लिए मथरू फाउंडेशन शुरू करने के लिए प्रेरित किया, जिसे वह आज भी चलाती हैं । वर्तमान में मथरू फाउंडेशन में 17 से अधिक बच्चे रहते हैं । मुख्य फोकस ग्रामीण भारत के पोलियो पीड़ितों पर है । कोई भी यह समझ सकता है कि उसकी ताकत कहां से आती है जब वह कहती है: “मैं खुद को फिर से खोजने और हर दिन नई चीजें सीखने

में विश्वास करती हूं। किसी की एकमात्र विकलांगता हीन भावना हो सकती है ।" उनका कभी हार न मानने वाला रवैया कई समकालीन खेल सितारों की आंखें खोलने वाला रहा है, जो अक्सर उन्हें चैंपियंस ऑफ चैंपियंस के रूप में संदर्भित करते हैं । 1981 में, जब मलाथी अस्वस्थ थीं और एक प्रतियोगिता में भाग लेना चाहती थीं । उसने अपने परिवार को उसे प्रतिस्पर्धा करने देने के लिए मना लिया । दुर्भाग्य से, उसकी श्रेणी में कोई अन्य प्रतिस्पर्धी नहीं था और उसे हटने के लिए कहा गया । लेकिन उसने हार नहीं मानी और उन्हें पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति देने के लिए मना लिया! "भागीदारी मेरे लिए महत्वपूर्ण थी । मैंने कहा कि मैं पुरस्कार के लिए नहीं दौड़ रही हूं," वह कहती हैं । उसने उस 100 मीटर की दौड़ में 8 पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा की और जीत हासिल की! वह कहती हैं, ''शारीरिक ताकत ही एकमात्र ऐसी चीज नहीं है जो मायने रखती है ।''

मलाथी की भावना, दृढ़ संकल्प और उत्कृष्टता प्राप्त करने का जुनून अनगिनत अन्य लोगों को प्रेरित करता रहेगा । यह किसी चमत्कार से कम नहीं है कि गर्दन के नीचे के पक्षाघात से पीड़ित एक व्यक्ति, 32 से अधिक सर्जरी के बाद, 400 से अधिक पदक जीतता है और किसी भी नागरिक के लिए सर्वोच्च सम्मान में से एक जीतता है । 2009 में अपनी जीवनी, ए डिफरेंट स्पिरिट के विमोचन पर उन्होंने कहा, "मैंने खेल को चुना और जीवन में कुछ अलग करने का फैसला किया । हां, हम अलग हैं और इसलिए हमारा जीवन भी उस अंतर का एक ज्वलंत उदाहरण होना चाहिए । उनकी जीवनी हजारों लोगों को अपनी शारीरिक विकलांगता से ऊपर उठने के लिए प्रेरित करती रही है।

★★★

गायत्री विकलांग मानव मंडल की ओर से गरीब निराधार और दिव्यांग बच्चों के लिए दिपावली के उपहार

गायत्री विकलांग मानव मंडलने इस दिपावली के शुभ अवसर पर गरीब निराधार और दिव्यांग बच्चों के लिए दिपावली के त्यौहार पर उपहारों की सौगात दी । दिपावली के शुभ अवसर पर इन जरुरतमंद बच्चों के चेहरों पर खुशी लाने के लिए भोजन, मिष्ठान, पटाखे और कपडों का वितरण किया गया था । संस्थान के प्रांगन में ही इन बच्चों के लिए मिठाई-मेवे के साथ अच्छे भोजन की व्यवस्था की गई थी, भोजन के बाद बच्चों को नये कपडे और पटाखों के बोक्स उपहार में दिए गये, ये उपहार पाकर बच्चों के चेहरों पर खुशी का समंदर उमड पड़ा था । विशेष रुप से नये कपडे और मिठाई एवं पटाखों के बोक्स पाकर बच्चे बहुत ही उत्साहित और रोमांचित हो उठे थे । बच्चों के लिए यह मानों अब तक का सर्वश्रेष्ठ उपहार था । संस्था की स्थापक श्रीमती रुक्ष्मणीदेवी ने भी बच्चों को ऐसे अवसरों पर दिए जानेवाले उपहारों से जीवन में जो खुशी मिलती है वह सब से बडी होती है यह बात कही । संस्थान हमेशा जरुरतमंद बच्चों की सहायता कर उनके चेहरों पर खुशियां लाना चाहता है, सभी बच्चों ने भी अपने अपने अंदाज में संस्था के द्वारा दिए गये उपहारों के लिए धन्यवाद किया था ।

मनोदिव्यांग बच्चों ने रेड थीम पर मनाई दिपावली

नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित ड़ॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल्ड के मनोदिव्यांग छात्रों ने स्कूल ट्रस्टी, स्टाफ और लायन् क्लब ऑफ संवेदना और लायन्स क्लब ऑफ आशाप्पली के सदस्यों की उपस्थिति में रेड थीम पर दिपावली पर्व मनाया था । सोला रोड स्थित बेचराजी मंदिर में इस दिपावली पर्व का आयोजन किया गया था । यहां पर उपस्थित सभी मनोदिव्यांग बच्चों ने पटाखे जलाकर दिपावली का आनंद उठाया था । संस्था की ओर से सभी मनोदिव्यांग बच्चों के लिए ढोंसा और उत्तपम का भोजन रखा गया था । दिपावली का रेड थीम पर आयोजन होने के कारण सभी बच्चें लाल रंग के कपडे पहनकर आये थे । सभी बच्चों को पटाखें और उपहार दिए गये थे । बच्चों का उत्साह बढाने के लिए ट्रस्टी, स्टाफ और सभी लोग लाल रंग के कपडे पहनकर आये थे । दिपावली के इस पर्व को उपस्थित सभी मनोदिव्यांग बच्चों ने बड़े शानदार तरीके से मनाया था ।

ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर